प्रकृति का मंत्रोच्चार
आत्मा की यात्रा का पड़ाव

यात्राएं अक्सर शरीर को थकाती हैं, लेकिन कुछ स्थान ऐसे होते हैं, जो उत्साह और उमंग भरने के साथ आत्मा को छू लेते हैं। नैमिषारण्य की यात्रा मेरे लिए कुछ ऐसा ही अनुभव लेकर आई। सुबह की नरम धूप और हल्की ठंडी हवा के बीच जब मैं नैमिष की ओर बढ़ रहा था, तो मन एक अजीब शांति से भरता जा रहा था। रास्ते में जब लोगों ने बताया कि नैमिष वह तपोभूमि है, जहां देवी-देवताओं और ऋषियों ने युगों तक साधना की। इसके बाद तो हवा के हर झोंके में आध्यात्मिकता का स्पंदन महसूस होने लगा। समीप पहुंचते ही ऐसा लगा जैसे यह भूमि अपने हर कण में इतिहास, अध्यात्म और पवित्रता समेटे है।

शिवेंद्र सिंह बघेल
शिक्षक

नैमिष पहुंचकर सबसे पहला दर्शन चक्रतीर्थ का हुआ। गोल घेरे में बने इस पवित्र सरोवर को देखते ही मन श्रद्धानवत हो गया। पानी बिल्कुल स्थिर था, लेकिन उसमें किसी अनदेखी लय की अनुभूति हो रही थी। जैसे समय की गति थमकर ध्यान में बैठ गई हो। जब मैंने अपने हाथ में जल उठाया, तो भीतर एक अजीब ऊर्जा महसूस हुई। मान्यता है कि ब्रह्माजी के चक्र से यह गोल कुंड बना था। चक्रतीर्थ से आगे बढ़ते हुए मैं हनुमानगढ़ी पहुंचा। यह मंदिर थोड़ी ऊंचाई पर स्थित है। मंदिर में बजती घंटियों की मधुर ध्वनि एक अलग ही संसार रच रही थीं। भक्तों की श्रद्धा, हवा में बिखरी चंदन की खुशबू और दीयों की लौ का तेज, सब मिलकर ऐसा माहौल बना रहे थे, जिसे शब्दों में बांध पाना कठिन है। मैं काफी देर सिर झुकाए खड़ा रहा, इस दौरान लगा मानो कोई अदृश्य शक्ति सिर को स्पर्श कर रही हो।

नैमिषारण्य केवल मंदिरों का समूह नहीं, बल्कि एक पूरी तपस्थली है। यहां के जंगलों में चलते समय ऐसा महसूस होता है कि प्रकृति स्वयं मंत्रोच्चार कर रही हो। लंबे-लंबे वृक्षों की छाया के नीचे चलते हुए मुझे लगा कि मैं किसी प्राचीन कथा का हिस्सा बन गया हूं। पक्षियों का कलरव और पत्तियों की सरसराहट का संगीत अनोखी शांति बिखेरता लगा। थोड़ा आगे बढ़कर मैंने व्यास गद्दी, दधीचि ऋषि आश्रम और अन्य पवित्र स्थलों के दर्शन किए। हर जगह एक अलग इतिहास, एक अलग भावना और एक अलग प्रकार का सुकून मिला। ऋषियों के तप और कथाओं की ऊर्जा इस स्थान पर जीवित प्रतीत हुई। शाम होने को थी और सूरज की किरणें चक्रतीर्थ के जल पर सोना बिखेर रही थीं। किनारे बैठकर डूबते सूरज को देखते हुए महसूस हुआ कि नैमिषारण्य धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि आत्मा की यात्रा का पड़ाव है। यहां आकर मन अपने आप ही विनम्र, शांत और निर्मल हो जाता है।

धार्मिक महत्व

नैमिषारण्य हिंदू धर्म की सबसे प्राचीन और पवित्र तपोभूमि में से एक है। माना जाता है कि यहां 88,000 ऋषियों ने सत्य और धर्म की रक्षा हेतु दीर्घकालीन यज्ञ किया था। पुराणों में वर्णित अधिकांश कथाएं, विशेषकर वेदव्यास और सूत जी द्वारा सुनाई गई कई महापुराणों की रचना, इसी पवित्र भूमि पर हुई। यह स्थान देवताओं, ऋषियों और साधकों की ऊर्जा से पूर्ण है। मान्यता है कि यहां की यात्रा जीवन के पापों को क्षीण करके मन को आध्यात्मिक शक्ति देती है और साधक को सत्य, शांति तथा मोक्ष के मार्ग के करीब लाती है।

इसलिए प्रसिद्ध है चक्रतीर्थ

चक्रतीर्थ नैमिषारण्य का सबसे पवित्र केंद्र माना जाता है। मान्यता है कि जब देवताओं ने सुरक्षित तपोभूमि की तलाश की, तब भगवान विष्णु ने अपना चक्र घुमाया और जहां वह गिरा, वहीं यह तीर्थ बना। इसके जल को अत्यंत पवित्र और कल्याणकारी माना जाता है। कहते हैं कि यहां स्नान करने से न केवल पापों का नाश होता है, बल्कि मन और आत्मा की शुद्धि होती है। पुराणों में इसे धरती का सबसे शुभ तीर्थ बताया गया है।

दधीचि ऋषि से जुड़ा इतिहास

मान्यता है कि नैमिषारण्य में दधीचि ऋषि ने देवताओं के लिए अपना शरीर अर्पित किया था। असुरों से रक्षा हेतु भगवान इंद्र को वज्र बनाने के लिए दधीचि की अस्थियों की आवश्यकता पड़ी और उन्होंने निःस्वार्थ भाव से अपना शरीर त्यागकर धर्म की रक्षा की। नैमिष की धरती दधीचि के इसी दिव्य तप, त्याग और साहस को संजोए हुए है, जहां आने से व्यक्ति त्याग, करुणा और धर्म की शक्ति को गहराई से महसूस करता है।

जॉब का पहला दिन

विभागाध्यक्ष की कुर्सी ने कराया जिम्मेदारी का एहसास

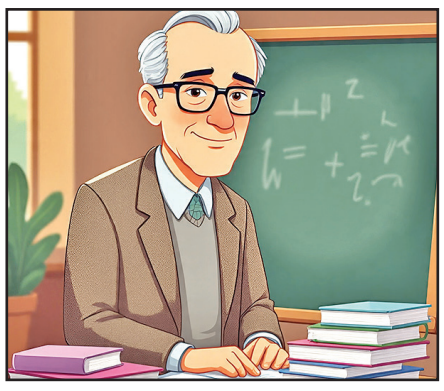

बात 5 सितंबर 2017 की है। माध्यमिक सेवा चयन आयोग से बतौर सहायक प्रोफेसर नौकरी लगी। गोरखपुर होम टाउन था, लेकिन नौकरी ज्वाइन करने के लिए हमें मुरादाबाद के कांठ का डिग्री कॉलेज आवंटित हुआ। मन में तमाम सवाल उठ रहे थे, कैसे कहां क्या करेंगे, मन में नई उमंगें लेकर गोरखपुर से मुरादाबाद के लिए ट्रेन में बैठ गए। नौकरी ज्वाइन करने के पहले दिन ट्रेन से मुरादाबाद जंक्शन पहुंचे, यहां से कांठ के डीएसएम डिग्री कॉलेज जाने के लिए एक बस पकड़ी। करीब एक घंटे में बस ने कांठ में उतार दिया, काफी खोजबीन के बाद कॉलेज पहुंचे, तब हम इस कॉलेज का पूरा नाम नहीं जानते थे, वहां पहुंचने पर मालूम हुआ कि इस कॉलेज का पूरा नाम ध्यान सिंह मैमोरियल डिग्री कॉलेज है, वो भी बोर्ड देखकर। यह कॉलेज राज घराने से ताल्लुक रखता है, अंग्रेजों के समय के बने इस कॉलेज में पहले दिन सबसे पहली समस्या भाषा की आई, गोरखपुर और मुरादाबाद की बोलचाल की भाषा में काफी अंतर है। कॉलेज में हर कोई व्यक्ति अपरिचित की नजर से हमें और हम उन्हें देखते थे, भाषा के साथ परिचय और खानपान की समस्या भी सामने आई। हमारे यहां चाय के साथ मीठा नहीं दिया जाता है। कॉलेज में पहले दिन चाय संग मीठा मिला। यह अनुभव जीवन में पहली बार हुआ।

उस दिन कॉलेज में कोई और प्रोफेसर नहीं पहुंचे, तो प्राचार्य ने मुझे पहले दिन राजनीति विज्ञान के विभागाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंप दी, जबकि यूनिवर्सिटी में पढ़ने के दौरान हम देखते थे कि विभागाध्यक्ष की बड़ी जिम्मेदारी होती है। क्लास में गए और राजनीति विज्ञान के बच्चों से परिचय हुआ, बच्चों से परिचय होने के दौराना उनका रूझान रोजगार की तरफ ज्यादा दिखा, तब पहले दिन बच्चों को पढ़ाई अच्छे से करने के साथ रोजगार के बारे में भी बताया। बच्चों की जिज्ञासाओं को शांत किया। जॉब का पहले दिन का अनुभव जीवन का सबसे श्रेष्ठ रहा है। चाय संग मीठा और पहले दिन ही विभागाध्यक्ष की जिम्मेदारी निभाने का एहसास जीवन के लिए बेहतर साबित हुआ। कांठ डिग्री कॉलेज में कई साल गुजारे और ग्रामीणों को भी विभिन्न योजनाओं के प्रति कार्यक्रम चलाकर जागरूक किया। इसके बाद रुहेलखंड यूनिवर्सिटी में काफी समय तक शिक्षण कार्य किया।

नीरज पाठक
सहायक रजिस्टार फर्म्स सोसाइटीज एवं चिट्स, बरेली

मेकअप वाली लड़की

एक समय की बात है, एक लड़की थी, जिसका नाम लूसी था। उसे मेकअप करने का बहुत शौक था। वह बिना मेकअप के घर से बाहर भी नहीं निकलती थी। स्कूल में उसे सब लोग 'परफेक्ट दिखने वाली लड़की' के नाम से जानते थे।

एक दिन स्कूल में अनाउंसमेंट हुआ कि जल्द ही प्रॉम नाइट होने वाली है। यह सुनकर लूसी बहुत उत्साहित हो गई। वह उसी पल से तैयारियों के सपने देखने लगी। जब सब लड़कियां अपने-अपने दोस्तों के साथ खरीदारी करने गईं, लूसी अकेली ही निकल पड़ी। उसने मेकअप की सारी चीजें खरीद लीं- लिपस्टिक, आईलाइनर, ब्लश, मस्कारा, आईशैडो, फाउंडेशन आदि। उसने एक खूबसूरत ड्रेस भी खरीदी। आखिरकार वह बड़ी रात आ गई। लूसी सुबह जल्दी उठी, तैयार हुई और मेकअप करना शुरू कर दिया। उसने पूरा दिन और शाम सिर्फ तैयार होने में लगा दी।

रात 7 बजे जब वह प्रॉम वेन्यू पहुंची, तो हर लड़की सुंदर लग रही थी, लेकिन लूसी सबसे अलग और चमकदार दिख रही थी। जब प्रॉम क्वीन का नाम घोषित हुआ, तो आवाज आई-"प्रॉम क्वीन हैं, बेका मेसन !" सबको पता था कि बेका बहुत दयालु और अच्छी लड़की है, इसलिए कोई हैरान नहीं हुआ, लेकिन अचानक बेका रोने लगी और बोली- "रुकिए ! मैं विनर नहीं हूं।" पूरा हॉल उसकी ओर देखने लगा। बेका ने कहा- "मैं इस प्रतियोगिता में भाग ही नहीं ले रही थी।" प्रिंसिपल ने सिर हिलाया और फिर दोबारा घोषणा की- "प्रॉम क्वीन हैं लूसी !" लूसी खुश तो थी, लेकिन उसने एक महत्वपूर्ण बात समझ ली- सच्ची चमक मेकअप से नहीं, बल्कि खुशी और दयालुता से आती है। उसने देखा कि बेका बिना मेकअप के भी मुस्कुरा रही थी, खुश थी और सबके साथ नाच रही थी। **-वनीशा साधवानी**

आपबीती

जिंदा रहने के लिए जरूरी है काम

बीते दिनों ऑनलाइन कुछ खाने का आर्डर किया। बताया गया कि पौन घंटे में डिलीवर हो जाएगा। हम तसल्ली से मैच देखते हुए खाने का इंतजार करते रहे। बीच-बीच में कुछ-कुछ पढ़ते भी रहे। इसके साथ मोबाइल में आए नोटिफिकेशन भी टनटन बजते तो उनको भी देख लेते। कुल मिलाकर एक 'व्यस्त इंतजार' करते रहे। थोड़ी देर में मैसेज आया। डिलीवर करने वाले का नाम और संदेश कि वह निकल चुका है। बताया कि बीस मिनट में पहुंचेगा।

मैच में भारत की स्थिति मजबूत दिख रही थी। पहले बॉलिंग और फिर बैटिंग दोनों में खिलाड़ियों का प्रदर्शन बढ़िया रहा। थोड़ी देर में मैच भी जीत गया भारत, लेकिन खाना नहीं आया। डिलीवरी करने वाले को करीब घंटे भर से सत्ताईस मिनट की दूरी पर ही दिखाता रहा जोमैटो। मैच खत्म होने के बाद रेस्टोरेंट वाले ने बताया कि डिलीवरी वाला, उनके यहां से तो निकल चुका है खाना लेकर। डिलीवरी वाले को फोन लगाया तो पता चला कि वह तो अभी गोमतीनगर में है। वहां से डिलीवरी करने के बाद आएगा हमारा खाना लेकर। गोमतीनगर हमारे घर से करीब बीस किलोमीटर की दूरी पर है। मतलब करीब आधा घंटा की दूरी।

अनूप शुक्ल
कानपुर

डिलीवरी वाला काफी देर तक सत्ताईस मिनट की दूरी पर ही रहा। शायद वह पहले वाली डिलीवरी ही निपटा रहा होगा। इसके बाद उसने चलना शुरू किया। हमारे पास पहुंचने के मिनट कम होते गए। अंततः वह आ ही गया। अपना सामान लेने के बाद हमने देरी का कारण पूछा, तो उसने बताया कि साथ ही उसको तेलीबाग में डिलीवरी का आर्डर मिला था (तेलीबाग हमारे घर के पास ही है)। वहां पहुंचने पर पता चला कि डिलीवरी गोमती नगर करनी है। जोमैटो वालों ने कहा-"जाना ही पड़ेगा, तो जाना ही पड़ा।"

गलती किसकी है पता नहीं, लेकिन इस चक्कर में डिलीवरी वाले को करीब चालीस किलोमीटर अतिरिक्त गाड़ी चलानी पड़ी। ग्राहक भगवान होता है। भगवान की सेवा जरूरी है। जाड़े के मौसम में मोटरसाइकिल पर चालीस किलोमीटर गाड़ी अतिरिक्त चलानी पड़ी डिलीवरी वाले को। बातचीत करने पर डिलीवरी वाले ने बताया कि सुबह ग्यारह बजे से रात नौ बजे तक उसने 14 आर्डर निपटाए। सात सौ रुपये करीब कमाई हुई। दो सौ रुपये करीब पेट्रोल के निकालकर पांच सौ रुपये बचे। डिलीवरी वाला बालक जाड़े के हिसाब से कपड़े पहने था। टोपा भी लगाए था, लेकिन हाथ में दास्ताने नहीं पहने था। पूछने पर बोला-"गाड़ी चलाने में असुविधा होती है।"

हमारा खाना काफी देर से मिला। ठंडा भी हो गया था, लेकिन हमने डिलीवरी में सबसे अच्छी रेटिंग ही दी। खाना गर्म करके खा लिया। खाने के बाद हर बार की तरह यह भी सोचा कि खाना घर में ही बनाकर खाना चाहिए। सामान डिलीवरी करने वाले लोगों को देखता हूं, तो लगता कि कितना कठिन काम है यह। ऐसा काम, जिसमें आगे कोई उन्नति का स्कोप नहीं है, लेकिन लोग कर रहे हैं। मजबूरी है। करना पड़ता है। जिंदा रहने के जरूरी है।